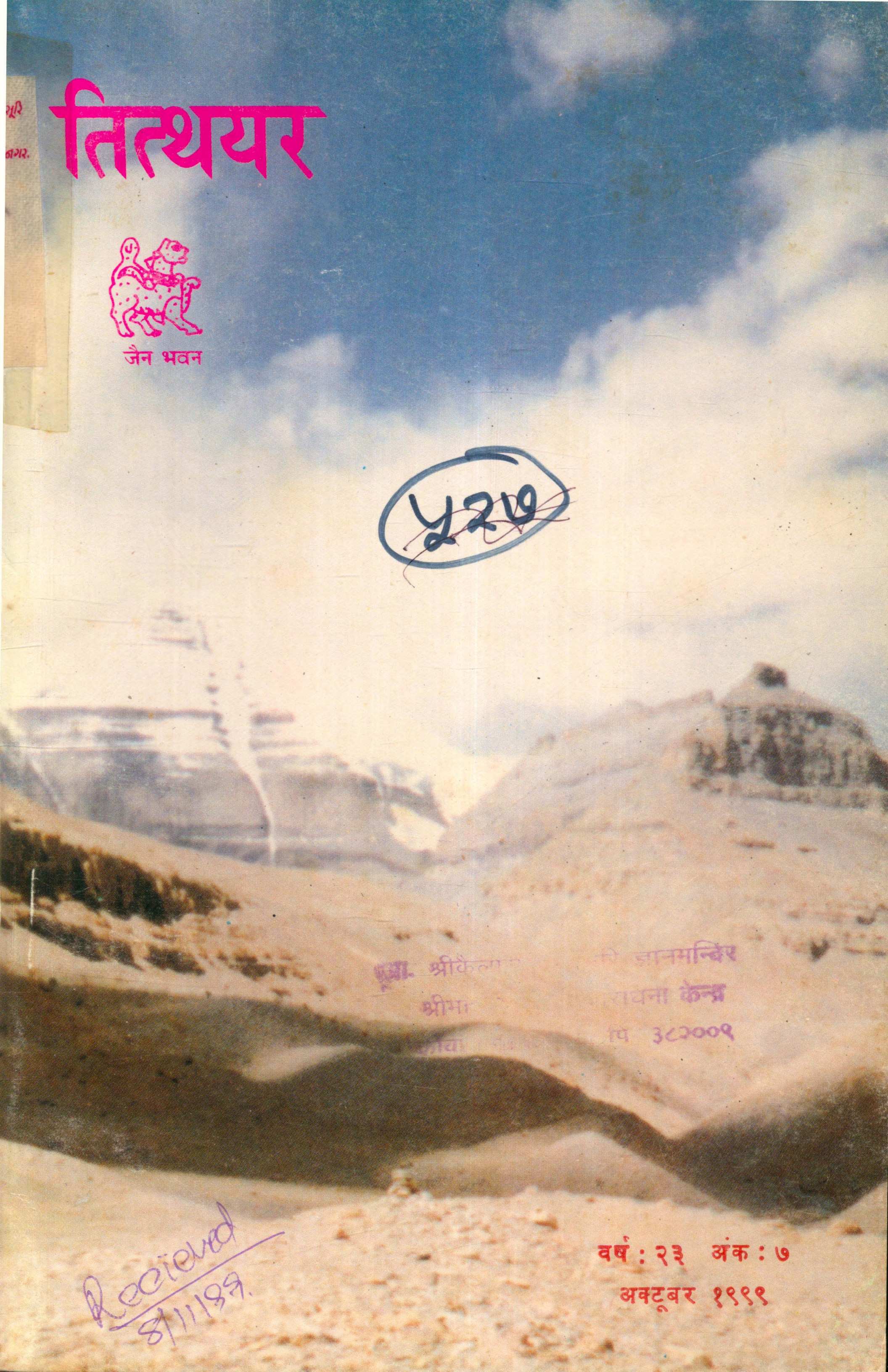

तित्थयर

जैन भवन

५२८

पू. आ. श्रीकैला... ज्ञानमन्दिर
श्रीम... आराधना केन्द्र
... ३८२००९

वर्ष : २३ अंक : ७
अक्टूबर १९९९

Received
8/11/99

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन

कलकत्ता

वर्ष - २३ अंक - ७, अक्टूबर १९९९

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
धातुमय जैन प्रतिमाएँ	श्री भँवरलाल नाहटा	५
श्रावक के दैनिक कृत्य		१६
धर्म का प्रभाव		२५

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :--

Eskays', *8, Sovaram Bysack Street, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083*

तित्थयर

संवादपत्र रजिस्ट्रेशन (केन्द्रीय) विधि (१९५३) के ८ नम्बर धारा के अनुसार निवृति :

प्रकाशन स्थान	:	कलकत्ता
प्रकाशन अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता-७०० ००७
प्रकाशक का नाम	:	लता बोथरा (भारतीय)
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता-७०० ००७
सम्पादक का नाम	:	लता बोथरा
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता-७०० ००७
सत्वाधिकारी का नाम	:	**जैन भवन**
ठिकाना	:	पी० २५, कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता-७०० ००७

मैं, लता बोथरा, घोषणा करती हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे ज्ञान एवं विश्वासानुसार सत्य है।

१५-७-९९ **लता बोथरा**

धातुमय जैन प्रतिमाएँ

श्री भँवरलाल नाहटा

जैनागम, इतिहास और कथा साहित्य के परिशीलन से स्पष्ट फलित होता है कि आत्म कल्याण के हेतु भूत प्रबल निमित कारण जिन प्रतिमादि का वंदन - पूजन अनादि काल से होता आया है। देवलोक नंदीश्वर दीप आदि के शाश्वत चैत्य इसके प्रत्यक्ष प्रमाण है। जिनेश्वरों में ऋषभानन, चन्द्रानन, वारिषेण और वर्द्धमान चार नाम शाश्वत है जो हर चौबीसी में एकाधिक अभिहित होते ही है। भरत क्षेत्र में कालचक्र के आरों के परिवर्तन से कृत्रिम जिनालय - जिन बिम्ब सीमित काल तक ही रह सकते हैं पर देव लोक व इतर क्षेत्रों में असंख्य वर्ष प्राचीन बिम्बों की अवस्थिति सर्व विदित है। परम्परा प्रवादानुसार वर्तमान में भी चतुर्थ काल की प्रतिमाएँ अनेक स्थानों में से प्राप्त हैं। जिन प्रतिमाएँ पाषाण् - मय, मृण्मय, स्वर्ण - रजत - पित्तलादि, अष्टधातुमय, काष्ठमय एवं विविध रत्नमय आज भी सर्वत्र पायी जाती हैं। राजा महाराजाओं और सम्पन्न श्रावकों के घरों में ही नही पर प्रायः हर श्रावक के घर में गृह चैत्यालय होते थे और उनमें अधिकांश प्रतिमाएँ धातुमय एवं रत्नमय ही रहती थी। सार्वजनिक जिनालयों के द्वार खुले रहते थे और उनमें पाषाणमय प्रतिमाओं का आधिक्य था। आभूषण, मुकुट, कुण्डलादि वस्तुएँ विशेष पर्वों में धारण कराये जाते थे और भण्डार की चाभियाँ, कुंचिक, गोष्टिक आदि श्रावकों के घरों में रहती थी। गृह चैत्यालयों में सुरक्षा का प्रबन्ध अधिक था। अतः सोने, चाँदी आदि धातुमय एवं रत्नमय बिम्ब वहीं अधिकतर पूजे जाते थे। काल के प्रभाव से अधिकांश गृह चैत्यालयों की प्रतिमाएँ सार्वजनिक मंदिरों में आ गई और थोड़े से घर देहरासर रह गए। राजस्थान के घरों में मंदिरी संज्ञक कक्ष जो आंगन के कोने में शाल के पास बनता है, वह उसी प्रथा का स्मारक है। आज

भी कुछ लोग उसमें अपनी कुलदेवियों की स्थापना रखते है परन्तु वह उपासना - गृह की उपयोगी पद्धति अब प्रायः लुप्त सी हो गई।

१. नगर कोट का कांगड़ा के राजमहलों में चैत्यालय था जिसमें स्थित रत्न प्रतिमाओं के दर्शन करने का उल्लेख जयसागरोंपाध्याय में विज्ञप्ति त्रिवेणी में किया है। मैसूर नरेश के यहाँ भी गृह चैत्यालय था।

जिन प्रतिमाएं जो लेप्यमय, पाषाणमय, रत्नमय बनती थी, उनमें विविध प्रकार के प्रस्तर उपयोग में लिए गए थे। जहाँ जिस जाति के पत्थरों की खाने निकट थी उन्ही पत्थरों को शिल्पियों ने सुकुमार हाथों द्वारा छैनी से घटित कर ह्रदय की भाव उर्मियों की अभिव्यक्ति करके कलाकार अपनी साधना व्यक्त करता था। किसी किसी शिल्पी ने अपने जीवन में केवल इनी-गिनी प्रतिमाएँ ही बनाई परन्तु उनमें अपने ह्रदय गत भावधन को इतना उड़ेल दिया कि दर्शक मुग्ध होकर ब्राह्म भाव विस्मृत कर अन्तर्लोक में विचरण करने लगता है। कई स्थानों की प्रतिमाओं में इस प्रकार का आर्कषण और सातिरायता हम प्रत्यक्ष देख पाते हैं। वस्तुतः पाषाण खण्ड के अन्दर प्रतिमा तो छिपी पड़ी है, शिल्पी उसके बाहरी स्तर हटा कर सही रूप का प्रगटीकरण करता है। जैसे ह्रदयगत भावों को ग्रन्थकार शब्द देह में ढालकर चित्र रूप में करने का उपक्रम करता है वही प्रक्रिया शिल्पी की शिल्प साधना में है। यही वस्तु हम पाते है प्राचीन अनेक प्रतीको में, परन्तु आज के यंत्र युग की भाँति मध्यकाल में भी जहाँ कलाकार का ह्रदय और मस्तिष्क भावों की गहराई में न उतरकर केवल हाथ ही काम करने लगे वहाँ कारखानों के उत्पादन की भाँति बाह्म रूपवाली प्रतिमाओं की फसलें उतरने लगी और वह सजीवता और भाव वैभव धारा जो गुहाकाल तक प्रवहमान हो अपने उन्नत शिखर पर आरूढ हुई थी, क्रमशः ह्रास की ओर गतिशील हो गई।

मथुरा की प्राचीन कला में हम जहाँ अनेक विद्याएँ प्रतिमाओं की, आयाग पटो की, परिकरों व प्रतीक शिल्पादि की पाते हैं हमारा ह्रदय उन्हे देखकर नाचने लगता है।

गुप्त काल में आकर उसमें और उन्मेष जुड़े। शालीनता, सुकुमारता, सुघड़ता, प्रमादों पेत लचक व भाव भंगिमा और वैभवशाली साज सज्जा प्रकृति प्रेरित दृश्यावली जो इस काल में पाषाण खण्डो में उतरी, सदा के लिए अपना वैशिष्ट्य मुद्राङ्कित कर गई। कला विकास की प्रवहमान साधना ने वास्तु विद्या - तक्षण कला प्राञ्जलता में निखार ला दिया। सारे देश में वहकला अपने उन्नत शिखर पर आरूढ हुई पर प्रान्तीय विशेषताओं ने उस सुकुमारता में ह्रास लाकर क्रमशः बने शास्त्र नियमों के अनुकरण करते हुए भी नवीन शैली प्रविष्ट रही। पाषाण प्रतिमाओं और परिकरादि विद्याओं में जो परिवर्त्तन विकास हुआ वह धातु प्रतिमादि में भी आना स्वाभाविक था। अलग - अलग प्रांतो से प्राप्त प्रतिमाओं में इतना अधिक वैविध्य आया और निर्देशको की सूचनानुसार, रुचि अनुसार प्रकारों का प्राचुर्य जो दृष्टिगोचर होता है आश्चर्य कारी है।

धातु प्रतिमाओं में चौवीसी ही लें तो उसके क्रम में अनेक प्रकार आए। केन्द्रीय प्रतिमा के अतिरिक्त अन्य प्रतिमाएँ कहीं द्वितल पंक्ति में, कहीं तोरष पट्ट में, ऊपरि भाग में, कहीं कक्ष में, कहीं सीधी पंक्तियों में, कही गोलाकार में निर्मित हुई। पंचतीर्थी, त्रितीर्थी, इकतीर्थी सपरिकर आदि प्रतिमाओं में कितनी ही प्रकार के प्रतिहार्यो के प्रकार भेद, गगन स्थित गन्धर्वो किन्नरियों पार्श्व स्थित इन्द्रादि चामरधारी, पुरुष स्त्रियों में शासन देवीयों और यक्षों के विभिन्न प्रवेश ने नवग्रह - अष्टग्रह के पूर्ण विकसित और संक्षिप्त रूप और स्थान परिवर्तन ने, प्रतिमा के पब्बासन, सिंहासन, लांछन, देवी देवताओं के अलंकार, आयुध, आसन मुद्रा आदि के परिवर्तन और तोरण, पाये, आधार, प्रभा मण्ङल एवं सम्पूर्ण प्रतिमा के आकार - प्रकार और अंग विन्यास में जो समय - समय पर परिवर्तन आये और देश में सर्वत्र वह शिल्प अपनी अपनी क्षेत्र मर्यादा के अनुसार पल्लवित पुष्पित हुए और उसमें असंख्य उन्मेष जुड़ते गए।

लेप्यमय, बालुकामय प्रतिमाओं के निर्माण का हम अनेक कथानकों में उल्लेख पाते हैं। रामायण काल में बनी बालुका की प्रतिमा भी सप्रभाव होकर चिर - स्थायी हो गई तथा ओसियां आदि की प्रतिमा के बालुकामय होने की प्रसिद्धि है।

इन्ही विधाओं को हम धातु के माध्यम से साकार हुआ पाते है। पर धातुमय वस्तुएँ भी अनेक बार भट्ठी में गलकर नये पर्याय में परिणत हो गई। इतिहास के पृष्ठ हमें जितनी सोने, चाँदी, पीतल आदि की प्रतिमाओं के निर्माण का हवाला देते है वे अब कहाँ उपलब्ध है। उन्हें अवश्य ही गलाकर ठिकाने लगा दिया गया इसमें दो मत नही है।

पाषाण प्रतिमाओं को यवनों ने तोड़ा और उनके टुकड़े गल नही सके, इसके कारण मस्जिदों में मकानों में चुन दिए गए चूर - चूर - कण - कण हो गए सडके बिछा दी गई, फिर भी जो खण्ड बचे वो आज भी खुदाई में या खण्ङहरों में प्रत्यक्ष दीख पडते है। मालदा (बंगाल) की आदीना मस्जिद जो कभी आदिनाथ स्वामी का बावन जिनालय था, की दीवालों में अखण्ङ प्रतिमाओं को उल्टा चुनकर कुरान की आयातें लिख दी गई। अनेक प्राचीन मस्जिदों में लगे उपादान इसके साक्ष्य है।

मथुरा तीर्थ कल्प से विदित होता है कि वहॉ का स्तूप, कुबेरा देवी ने मेरू पर्वत की स्थापना स्वरुप स्वर्ण और मणि रत्नों से निर्माण किया था। कालान्तर में पार्श्वनाथ स्वामी के समय भी जब राजा की नीयत बिगड़ गई तो पंचम काल के भावी दृश्य को लक्ष्य कर देवी ने उसे प्रस्तर मय कर दिया। यहॉ भी पूर्व काल के धातु शिल्प की बात स्पष्ट है।

अभय कुमार ने मगध के परम्परागत भिन्न आर्द्रक देश के युवराज आर्द्रकुमार को प्रतिबोध देने के लिए जिस प्रतिमा को भेजा था वह भी अवश्य स्वर्णमय और रत्नजड़ित थी। उसे गले, मस्तक आदि पर धारण करने की चेष्टा व ऊहापोह में ही आर्द्रकुमार जाति स्मरण पाकर बोध प्राप्त हुआ था।

धातु प्रतिमाओं की सहस्त्रों की संख्या में प्रतिष्ठित होने के उल्लेख प्राचीन गुर्वावलियों एवं प्रबन्ध ग्रंथादि में पाये जाते हैं। मुसलमानी काल में बहुत सी प्रतिमाएँ यवनों द्वारा नष्ट कर दी गई, गला दी गई। चिन्तामणिजी के मंदिर (बीकानेर) की आदिनाथ चौबीसी का परिकर कामरा ने नष्ट कर दिया था, जिसका उल्लेख उक्त प्रतिमा के परिकर

पर पाया जाता है। यवनों के भय से कुछ प्रतिमाएँ भूमि में गाड़ दी जाती थी। आज भी स्थान - स्थान पर खुदाई में प्राचीन प्रतिमाएँ मिलती है। अमरसर के धोरे में प्राप्त प्रतिमाएं बीकानेर के म्यूजियम में प्रदर्शित है। अकबर का अधिकारी तुरसमखान सहस्राधिक प्रतिमाएं सं. १६३३ में सिरोही की लूट में लाया था, जिन्हे वह गला कर सोना निकालना चाहता था। सौभाग्य वश अकबर ने गलाना मना कर अपने खजाने में फतेहपुर सीकरी में रख दी जिन्हे सं १६३९ में मंत्रीश्रर कर्मचंद बच्छावत (मं रतनसिंह के सहयोग से प्राप्तकर बीकानेर ले आये और आज भी वे चिन्तामणि के भण्डार में विद्यमान है।

धातु प्रतिमाएं न केवल गुजरात राजस्थान में ही अपितु सारे भारत में समाप्त है। श्वेताम्बर, दिगम्बर उभय परम्पराओं की धातु प्रतिमाएं बनती थी। दक्षिण भारत में तो आज भी पर्याप्त परिमाण में जैन - जैनतर धातु प्रतिमाएं उपलब्ध है। कहा जाता है कि महाराजा अनूप सिंह भी बहुत सी धातु प्रतिमाएं प्राप्त कर के बीकानेर लाये थे जो पुराने किले के बड़े कारखाने में स्थित तेंतीस करोड़ देवताओं के मंदिर में देखी गयी। हमारे संग्रह में भी ऐसी विविध प्रतिमाएं विद्यमान है। बंगाल में जैनेत्तर प्रतिमाएं तो मिलती ही है पर जैन प्रतिमाएं भी सहस्राब्दि प्राचीन पाई गई है। नेपाल और तिब्बत की कलापूर्ण बौद्ध प्रतिमाएं प्रचुर परिमाण में पायी जाती थी। दसवीं शताब्दी की एक जिन प्रतिमा केमला (बलोरिया म्यूजियम) में सुरक्षित है जो कभी किसी भारतीय समुद्र यात्री द्वारा वहाॅ ले जायी गई प्रतीत होती है। वह प्रतिमा त्रिस्तरीय सिंहासन पर अकेली विराजमान है।

चीन के किसी बौद्धायतन में जिन प्रतिमा पूजी जाने का उल्लेख मोती साह सेठ के समय का प्राप्त है।

जैन साहित्य में प्रतिमा निर्माण के लिए बिम्ब भराना शब्द प्रचलित है। जो धातुरस को साॅचे में ढालने भरने की प्रथा से सम्बन्धित है।

खण्डगिरि उदयगिरि में हाथी गुफा के शिलालेख में कजिंगजिन आदिनाथ की जिस प्रतिमा को राजा नंद ले गया था, महामेघवान

चक्रवर्ती सम्राट खारवेल मगध को जीतकर प्रतिमा को पुनः कलिंग में लाया। वह प्रतिमा अति प्राचीन और स्वर्णमय थी ऐसा कुछ विद्वानों का कथन हैं।

भ० पार्श्वनाथ की खड़ी कांयोत्सर्ग मुद्रा की कांस्य प्रतिमा प्राप्त है, जिसका दाहिना हाथ खंडित है। दोनों पॉवो के बीच पृष्ठ भाग में सांप ऊपर मस्तक फण किये अवस्थित है। इसका काल ईसा की दो एक शताब्दी पूर्व होने का अनुमान किया जाता है। यह प्रतिमा बंबई के प्रिंस आफ वेल्स म्यूजियम में है। इसका प्राप्ति स्थान अज्ञात है। यह मोम सॉचा विधि से ढली हुई हल्की प्रतिमा है। विद्वानों ने इसकी हड़प्पा और मौर्य काल की कला से तुलना की है।

पटना म्यूजियम में चौसा से प्राप्त कतिपय कांस्य निर्मित जिन प्रतिमाएं और एक सुन्दर उदाहरण अशोक वृक्ष और धर्म चक्र है। ये गुप्त और गुप्तोत्तर काल की मगध मूर्ति कला के सुन्दर उदाहरण है। दो चन्द्र- प्रभ प्रतिमाएं सिंहासन पर स्थित हैं। दोनों के सिंहासन के ऊपर अलंकृत स्तंभ व पृष्ठ भाग में अर्धगोलाकार प्रभा मंडल है। अलंकृत स्तंभो के ऊपर मकर मुख है जिनकी जिह्वा मुड़कर सिंह की पूंछ की भांति वृताकार हो गई है। इस प्रभा मंडल पर चंद्र लांछन बना हुआ है। प्रतिमा के ऊपरी भाग में लक्षण इन्ही प्रतिमाओं में देखा गया है।

तीसरी प्रतिमा भगवान ऋषभदेव की है जिसके कंधे पर केश राशि स्पष्ट है। प्रभु के नीचे पच्छवासन पर सिंहासन न होकर केवल दो पाये सामने परिलक्षित है चौथी प्रतिमा पार्श्वनाथ भगवान् की फण मंडित है जिसके नीचे द्विस्तरीय सिंहासन है। शरीर की ऊँचाई और मुखमंडल की सौम्यता देखते ही बनती है। ऋषभदेव और पार्श्वनाथ प्रतिमाएं चंद्रप्रभ प्रतिमाओं से प्राचीन प्रतीत होती है। एक और ऋषभदेव भगवान की प्रतिमा है जो प्रथम के सदृश ही है इन प्रतिमाओं में श्री वत्स चिन्ह बने हुए हैं। भगवान ऋषभदेव की एक खड़ी हुई प्रतिमा है जिसके कंधो पर केश राशि फैली हुई है, मस्तक के पृष्ठ भाग में वृत जैसा बना हुआ प्रतीत होता है।

नालन्दा के राष्ट्रीय संग्रहालय में एक अम्बिका की कांस्य मूर्ति उपलब्ध हुई है जो नौवीं दसवीं शती की सुन्दर कृति है। देवी का दाहिना गोडा नीचे पाह पीठ पर रखा हुआ है और बांये गोड़े पर बालक बैठा है। सिंह पर बैठी हुई देवी के पृष्ठ भाग में चौरस पट्टिका लगी है जिसके ऊपर उभय पक्ष में मकर मुख निकले हुए है। देवी के गले में हार कुण्डल और एक श्रृंखला यज्ञोपवीत की भांति दाहिने गोड़े पर आई हुई है। मुख मंडल के पृष्ठ भाग में लम्बा गोल प्रभा मंडल सुसज्जित है।

धनबाद जिले के अलुआरा में २९ कांस्य मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं। जो पटना संग्रहालय में हैं। इनमें अधिकांश खड्गासन तीर्थंकर प्रतिमाओं की हथेलियाँ उंगलियां देह का स्पर्श करती है। ललाट पर उर्णा का अंकन है और पादपीठो पर विभिन्न पट्टिकाओं में अलंकरण के साथ - साथ लांछन बने हुए है। जिसमें ऋषभदेव, चन्द्रप्रभ, अजितनाथ, शांतिनाथ, कुंथुनाथ, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर और अम्बिका मूर्तियाँ सहज में पहचानी जाती है। निर्माण शैली के आधार पर यह ग्याहरवीं शती के प्रारंम्भ की विदित होती है।

मानभूम से प्राप्त आदिनाथ भगवान की एक कांस्य मूर्ति कलकत्ता के आशुतोष म्यूजियम में संरक्षित है जो नवीं - दसवीं शती की है। नलगोड़ा - यह बंगाल के २४ परगने का एक स्थान है जहॉ तीर्थंकर नेमिनाथ की अधिष्ठायी अम्बिका की सुंदर कांस्य प्रतिमा प्राप्त हुई है यह प्रतिमा धनुषाकार फैले वृक्ष के नीचे कमलासन पर खड़ी है। यह कमलासन एक सुंदर जालीदार पाद पीठ पर है जिससे आम्र वृक्ष का तना वाम पार्श्व से निकला है इसके पास देवी का वाहन सिंह बैठा हुआ है। देवी के बाएं गोद में बालक है जिसका हाथ देवी के स्तन पर है, दाहिनी ओर दूसरा बालक निरावरण दशा में पाद पीठ पर खड़ा है।

देवी के हाथों में चूड़ियाँ, पैरों में नुपुर, गले में हार, कानों में कर्ण फूल पहने हुए है। गोड़े से थोड़े नीचे तक साड़ी के गोल सल स्पष्ट परिलक्षित है। क्षीण कटि और कृषोदर पर साड़ी लपेटी हुई है। यह प्रतिमा दसवीं शती की प्रतीत होती है।

मध्य प्रदेश के सभी मंदिरो में विविध कला की धातु प्रतिमाएँ प्राप्त है। इन सब में आरबी के सैतवालों के मंदिर की धातु प्रतिमा अपना विशिष्ट स्थान रखती है। प्रान्त की अन्य प्रतिमाओं की भांति यह भी अर्द्ध पद्मासन मुद्रा में कमलासन स्थित है। पिछले भाग में लगा हुआ तकिया एक जैन वास्तु ब्राह्म विद्या है। तकिये के अभय पक्ष में ग्रास एवं ऊपर के मकर मुख बड़ी ही बारीकी से अभिव्यक्त हैं। मूल प्रतिमा पर छत्रय के चतुर्दिग पीपल पत्तियों का अंकन है। यह चौवीसी है, सभी छोटी प्रतिमाएं अर्द्ध पद्मासन मुद्रा में हैं। मूल प्रतिमा के उभंय पक्ष स्थित चामरधारी और चरणों के निकट स्थित देव व देवी भी अर्द्ध पद्मासन में है और विविध अलंकार व आयुधों से परिपूर्ण है। सारी प्रतिमा चार खंभो पर स्थित है। इस प्रतिमा की विविध आकृतियाँ उत्कीर्णित है। ढांचा एक मंदिर के शिखर को दृष्टि में ला देता है।

सिरपुर की आदिनाथ प्रतिमा - मुनि श्री कांति सागर जी ने मध्य प्रदेश प्रवास में अनेक उपलब्धियाँ की थी जिनमें दो धातु प्रतिमाएं हैं जिन्हे वे लगभग ५४ वर्ष पूर्व कलकत्ता लाये थे। एक प्रतिमा तो बौद्ध देवी तारा की अनुपम कला की साकार प्रतिमा थी, दूसरी भगवान ऋषभदेव की। इसका उस समय विस्तृत अध्ययन कर लेख लिखे गये थे। उन्हें वे प्रतिमा सिरपुर के महंत मंगलगिरि से प्राप्त हुई थी। पहले उसे बीकानेर में रखने की मैंने बात की थी पर पुरात्तत्वाचार्य श्री जिन विजयजी के कलकत्ता पधारने पर उन्होनें उन्हें समर्पित कर दी। उन्होंनें उसे भारतीय विद्या भवन बंबई में रखा। कुछ वर्ष पूर्व जयपुर म्यूजियम के क्यूरेटर श्री सत्यप्रकाश जी ने मुझे वह प्रतिमा अमेरिका में देखी गयी बतलाया, यह तो हुई बौद्ध मूर्ति की बात। दूसरी प्रतिमा भी मैने श्री राजेन्द्र सिंहजी सिंघी के पास कई वर्ष पूर्व देखी थी।

सिरपुर से प्राप्त आदिनाथ प्रतिमा दसवीं शताब्दी की लगती है। ताम्रवर्णी प्रतिमा कला की दृष्टि से विशेष महत्व रखती है। मध्य कमलासन पर युगादिदेव विराजमान है जिनके स्कंध पर केशावली प्रसरित है। पृष्ठ भाग का अलंकृत प्रभामंडल पर्याप्त बड़ा और कलापूर्ण

है। भगवान के कमलासन पर वृषभ लांछन स्पष्ट परिलक्षित है। और निम्न भाग में नवग्रहों की बड़ी - बड़ी मूर्तियां विराजमान है। अनेक मूर्तियों की भांति नवग्रह कहलाने वाली आठ मूर्तियां ही पायी जाती हैं। क्यों कि वास्तु - सार के अनुसार राहु केतु को एक ही मान लिया गया है। दाहिनी ओर अंबिका देवी है। जिनके बांये गोद में व दाहिनी ओर सिद्ध बुद्ध संज्ञक बालक विद्यमान है। इनके दाहिनी ओर परिकर से निकले रोडे पर यक्षराज विराजमान है। भगवान के वामपार्श्व में श्यामा देवी अवस्थित है।

भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ द्वितीय भाग में मानपुर (उड़ीसा) के कुछ धातु निर्मित चौबीसी आदि के फोटो छपे है। चौवीसी बड़ी विलक्षण और अपनी शैली की अद्वितीय ढंग की प्रतिमा है। पांच प्रतिमाओं की प्राप्ति कटक भुवनेश्वर मार्ग पर नदी की मिट्टी खोदते समय नकुल भट्ट खंडायत को प्राप्त हुई थी। उसने एक मंदिर बनवाकर उसमें विराजमान कर दिया। इन प्रतिमाओं के मध्यवर्ती चौवीसी प्रतिमा में मध्यम भाग गोलाकार में १२, ऊपर ८ और चारों कोनों पर २४ मूर्तियां है। इनके अतिरिक्त नीचे के भाग में पार्श्वनाथ और शीर्ष पर महावीर प्रतिमा है। दोनों ओर सिंह स्तंभ पर तोरण अवस्थित है। निम्नभाग में देवी देवताओं की प्रतिमाएं परिकर में अवस्थित है। यह मूर्ति संवत १०९ की निर्मित है। इसके साथ दो - दो खड्गासन प्रतिमाएं है जिनमें एक पार्श्वनाथ और तीन ऋषभदेव भगवान की हैं। इनकी ऊँचाई दो छह इंच की, एक ९ और एक ११ इंच की है। ग्यारह इंच की कमलासन पर खड़ी ऋषभदेव प्रतिमा में पाद पीठ पर चतुर्दिग नौ ग्रह बने हुए है। यह प्रतिमा भी अपने ढंग की एक ही है।

भानपुर के पास २ मील प्रतापपुर गॉव में भी प्रतिमाएं निकली थी। उड़ीसा में जैन प्रतिमाएं प्रचुर परिमाण में प्राप्त हैं।

कटक के चन्द्रप्रभ जिनालय में एक धातुमय ऋषभदेव भगवान की खड्गासन प्रतिमा बड़ी भव्य है। प्रभु की केश राशि उभय भाग में तीन - तीन लटाओं में प्रसरित है। चौरस सिंहासन पर गोल कमलासन पर

प्रभु खड़े हैं उभय सिंहों के मध्य में कुंभ रखा हुआ है और आगे निकले हुए अलग पाये पर वृषभ (लांछन) बैठा है।

उड़ीसा के राजकीय संग्रहालय में वानपुर से प्राप्त कांस्य प्रतिमाओं का महत्व पूर्ण संग्रह है। उनमें (१) आम्र वृक्ष के नीचे बैठी गोद में बालक को लिये हुए अंबिका (२) वृक्ष की शाखा को पकड़कर खड़ी अशोका या मानवी देवी जिसके आसन पर रीछ अंकित हैं (३) सप्तफणावली युक्त पार्श्वनाथ (४) सर्प लांछन से अंकित पाद पीठ पर बड़े पार्श्वनाथ (५) कमल पुष्प युक्त पाद पीठ पर कार्योत्सर्ग मुद्रा में खड़े आदिनाथ की मूर्ति इनमें आदिनाथ प्रतिमा उत्कृष्ट कला कौशल का उदाहरण है। सुन्दर जटा जूट मंडित प्रभु की प्रशान्त मुख मुद्रा और शरीर का सौम्य गठन प्रेक्षणीय है। उस पर उत्कीर्णित अभिलेख के अनुसार यह श्रीकर संज्ञक व्यक्ति द्वारा निर्मापित है। ये प्रतिमाएं कला की दृष्टि से दसवीं शती की हो सकती हैं जिनका अध्ययन होना आवश्यक है।

उड़ीसा कटकपुर से प्राप्त एक ऋषभदेव भगवान की सुंदर प्रतिमा कलकत्ता के इण्डियन म्यूजियम में प्रदर्शित है। यह कांस्य प्रतिमा एक सुंदर पाद पीठ पर कमलासन के ऊपर अवस्थित है। पाद पीठ पर मध्य भाग में वृषभ (लांछन) बैठा है। प्रभु की कायोत्सर्ग मुद्रा में हाथों की उंगलियाँ देह स्पर्श कर रही है। मस्तक पर ऊंचा उष्णीश और स्कंध प्रदेश पर दोनों ओर तीन-तीन लटों में केश राशि फैली हुई है। प्रतिमा के पाद पीठ पर म्यूजियम का क्रमांक ९२४३ लिखा हुआ है दूसरी चंद्र प्रभ प्रतिमा आशुतोष संग्रहालय में है जो ११ वीं शती की है।

छठी शताब्दी के शैलोद्रव राजा धर्मराज के बानपुर - ताम्रलेख में उसकी रानी कल्याणी देवी द्वारा एकशत प्रबुद्ध चंद्र नामक जैन मुनि को कुछ भूमि देने के उल्लेख है। (छोटालाल स्मृति ग्रंन्थ पृ १७०)

वानपुर की ऋषभदेव कांस्य मूर्ति खड्गासन मुद्रा में है।

आकोटा की प्रतिमाएँ - आकोटा से प्राप्त (गुजरात) कतिपय धातु प्रतिमाएं बड़ौदा म्यूजियम में प्रदर्शित है जिनका परिचय कराया जा रहा है।

(१) **ऋषभदेव** - यह कांस्य प्रतिमा खड्गासन मुद्रा में है। यह अत्यन्त सुंदर और ७६ सेमी. ऊँची कलापूर्ण है। इसका एक हाथ सर्वथा और आंशिक रूप में जर्जित क्षति ग्रस्त है। पाद पीठ तो सर्वथा लुप्त है पर इसके नीचे तक धोती वस्त्र धारण दिया हुआ है। इस गुप्त कालीन कंबु ग्रीव और क्षीण कटि प्रदेश वाली प्रतिमा के नेत्र रजत मंडित और अधर ताम्रवर्णी हैं। स्कंध प्रदेश पर लटकी केश राशि वाली इस बहु प्रतिमा को उत्तर भारत की सुंदरतम प्रतिमा कहा जा सकता है। यह प्रतिमा ५ वीं शती की है।

(२) **जीवन्त स्वामी** - यह प्रतिमा कुछ क्षतिग्रस्त हो जाने पर भी अत्यन्त सुंदर और मस्तक पर मुकुट और उसके पीछे चौरस टोपी जैसा परिधान है जिस पर गोल वातायत अंलकृत है। ललाट के ऊपर भाग में मस्तक में, केश मुकुट के नीचे दिखाई देते है। और स्कंध प्रदेश पर बालों कुण्डलित लटें तीन भागों में बिखरी हुई है। भगवान महावीर की अर्ध की निमिलत नेत्र नासाग्र दृष्टि कार्योत्सर्ग ध्यान की उच्चतम अवस्था को उजागर करती है। भगवान के ललाट पर गोल टीकी दी हुई है। प्रभु के भुजबंद स्कंध प्रदेश के नीचे पहनाए हुए हैं जिन में मुकुट की गवाक्ष शैली मणिमाल वत् परिलक्षित होती है। कंबु ग्रीव प्रभु के गले का हार पर्याप्त विशाल है और हाथों में वलय पहने हुए है। कटि मेखला से कसी हुई धोती नीचे तक आई हुई है। धोती के सुघड़ सल स्पष्ट हैं और मध्य भाग में अलंकृत पर्यसत्क बंधा हुआ है। धोती की चुन्नटें वज्री जैसी लगने लगी है। यह प्रतिमा पूर्व गुप्त काल की कला का उत्कृष्ट नमूना है।

——o——

श्रावक के दैनिक कृत्य

।। प्रातः काल।।

रात्रि का चौथा पहर आरम्भ होते ही हर एक मनुष्य को निद्रा त्याग कर देनी चाहिए। यदि इस समय नींद न छोड़ सके तो चार घड़ी रात रहते प्रभात समय तो अवश्य ही जाग उठना उपयुक्त है। अधिक देर तक सोना बुद्धि और विचार को हानि पहुँचाता है। आलस्य तथा प्रमाद बढ़ते हैं। आलस्य से मनुष्य निर्धन बन जाता है। भोजन और नींद जितनी बढ़ाओ बढ़ती है जितनी कम करो कम हो जाती है। प्रातः काल बिस्तर पर नवकार मंत्र का जाप करते हुए बैठ जाना चाहिए। यदि इस समय शरीर और कपड़े किसी कारणवश अपवित्र हों तो मन ही मन नवकार मंत्र को गिना जावे। यह जरूर ध्यान रहे कि आंख खुलते ही नवकार मंत्र का अवश्य विचार हो। क्यों कि यदि ऐसा न किया तो जागते ही दूसरे विचार दिल में स्थान पा जावेंगे। सब जानते हैं कि शुद्ध पात्र में जो वस्तु भरी जावेगी उसका प्रभाव (सुगन्ध वा दुर्गन्ध) पात्र पर अवश्य पड़ेगा। जैसे किसी बरतन में, हींग लहसुन आदि चीज डाल कर निकालने के बाद भी, वस्तु की दुर्गन्ध दूर नहीं होती, अथवा केसर, कपूर, कस्तूरी आदि सुगंधित द्रव्य भर कर खाली होने पर भी सुगन्ध बनी रहतीं है जब तक कि उस पात्र को भली-भांति साफ न कर लिया जावे। इसी प्रकार जब हम सो जाते हैं, तो मन भी नींद के कारण शान्त अवस्था में होता है तथा अन्य विचार भी शान्त हो जाते हैं। चित्त निर्मल होता है। साफ बर्तन की तरह का होता है, जागने पर फिर दबे हुए पुराने विचार आ घेरते हैं। विचारणीय बात यह है कि विचार स्वयं आते जाते है अथवा सोचने से आते हैं ?, सत्य तो यह कि हमारी प्रकृति विचार करने की बन गई हैं। अतः कई विचार बिना ख्याल किये ही दिल में उठने लग

जाते हैं। किन्तु यदि हम किसी को स्मरण न करें तो वह हमारे विचार में आती ही नहीं, अतः बुरे विचारों को याद आने का अवसर ही न देना अच्छा है।

हम सांसारिक जीव हैं, हमें जगत के काम काज अथवा अधिक प्रिय पदार्थ बहुत जल्दी याद आते हैं। यही कारण है कि प्रायः हमारा अधिक समय जगत के कार्य भोजन तथा विलासिता आदि के विचारों में चला जाता है। हर घड़ी इस प्रकार की तरंगे मन को घेरे रहती हैं। उत्तम विचार और धर्म सम्बन्धी कार्यों की ओर ध्यान कम लगता है, यहाँ तक कि प्रातःकाल उठते ही नवकार मंत्र का पाठ भी भूल जाते हैं। यदि हमारा मन धर्म की ओर हो और ऐसा ही विचार करके देव गुरू भगवान के धर्म को स्मरण करें तो हमारा भी ऐसा ही पवित्र स्वभाव बन जावे। हर समय उठते बैठते, सोते जागते, हमारे चित्त में धर्म के ही विचारों का प्रकाश पड़ेगा। सदा यही वाणी से निकलता रहेगा, थोड़ा सोचने विचारने की जरूरत है।

कोई कहे कि अशुभ विचार जागते समय यदि प्रकट हों तो उससे क्या हानि है, कार्य करते समय उनको त्याग देंगे। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि -प्रायः कई बार मनुष्यों को यह कहते आपने सुना होगा - आज प्रातः काल उठते ही अमुक मनुष्य का मुँह देखा अथवा अमुक का नाम लिया तो सारे दिन रोटी खाने को न मिली, अमुक हानि हुई, दुकान पर दो पैसे की भी कमाई नहीं हुई, अथवा लड़ाई - झगड़े में दिन बीता इत्यादि। और एक दिन अमुक का मुंह देखा अथवा नाम लिया तो सारा दिन खुशी से बीता, सब प्रकार से आनन्द रहा। यह बातें झूठी नहीं, सब जानते हैं किसी हद तक इनका असर भी हो जाता है। इससे प्रकट है कि जागते ही हमने किस अच्छे या बुरे का मुँह देखा अथवा नाम लिया जिससे हमारे विचार भले - बुरे हुए और इन्हीं विचारों के अनुसार हमारा मन शान्त वा अशान्त रहा। अच्छी बुरी भावना के अनुसार हमारे भले बुरे विचारों के अनुसार बाहर आकर कर्म हमको सुख दुःख देते हैं।

इस बात से यह जान लेना और निश्चय करना चाहिए कि नींद

के दूर होते ही परमात्मा का भजन आरम्भ करदें, ताकि मन - रूपी शुद्ध पात्र में बुरे विचार, गन्धवत् प्रवेश न कर सकें। इससे प्रथम ही उत्तम विचारों का प्रभाव जम जावे, सुगन्ध भरी रहे, जिससे हमारा सारा दिन आनन्द से बीते, किसी प्रकार की हानि न होने पावे। भगवान का नाम पुण्य का कारण है। नाम जितनी बार लिया जावे अच्छा है गिनती का कोई बन्धन नहीं। किन्तु यथा शक्ति जितना अधिक नाम स्मरण किया जावे उतना अधिक अच्छा होगा। किसी पाठ को जितनी बार मन लगाकर स्मरण किया जाता है। वह उतना ही चिरस्थाई होतां है. जितनी बार किसी बात को दिल से सुनी हो वह उतनी ही शीघ्र विचारों में आती है। ऐसे ही परमात्मा का नाम भली प्रकार एकाग्र चित्त से दुनियांदारी की सब बातों को विस्मृत कर पवित्र हृदय से जपा जाना ठीक है। सांसारिक कार्य करते हुए भी फिर यह याद आता ही रहेगा और कई बार नाम लेने से, स्मरण करने से लाभ भी अधिक होगा। जिस तरह कुम्हार बर्तन बनाते समय अपने चाक को एक बार जोर से घुमाकर छोड़ देता है, बाद में वह अपने आप बहुत देर तक चक्कर काटता रहता है, उसकी गति बनी रहती है। उसी प्रकार भगवान का नाम भी जितने वेग के साथ स्मरण किया जावेगा वह उतनी देर लौकिक कार्य करते हुए भी स्मरण आता रहेगा। इस तरह मन पर मजबूत छाप लगने से तथा गम्भीर प्रभाव के कारण उस पर भगवान का नाम अंकित कर लेने से, बहुत शीघ्र अशुभ कर्म घट कर मन निर्मल हो जावेगा। ऐसा होने से उत्तम गुणों के बढ़ाने में कोई बाधा न होगी। भगवान का नाम लेते हुए इसी प्रकार हम भी महात्माओं की तरह अपना आदर्श जीवन बना सकते हैं। पहले कहा गया है कि नाम स्मरण की गणना नहीं, तथापि जो जन नाम स्मरण के प्रमादी हैं उनको नियम करना चाहिए कि कम से कम २१ बार अवश्य जपें।

यदि इतना भी न हो सके तो सात बार तो अवश्य जपें। किसी स्थान पर आठ बार जपने का भी जिकर है। जिन लोगों को सारा दिन प्रतिपल भगवान् का नाम स्मरण करने की अभिलाषा हो वे कोई उत्तम श्लोक अथवा भजन कण्ठ करलें। जिसमें ईश्वर के गुण - कर्तव्यादि का वर्णन पाया जावे। जिनमें वैराग्य की झलक हो। ऐसे पद सदा उठते-

बैठते बड़े प्रेम और मीठी आवाज से उसके अर्थ की ओर ध्यान रख कर बार-बार जिह्वा से कहने चाहिए यहाँ तक कि दिल पर भली प्रकार पड़ जावे। हर घड़ी और प्रत्येक काम के समय पर बस वे शब्द मुंह से निकल पड़ें। यह स्मरण रहे कि ऐसे श्लोक या पद्यों का जितना संस्कार मन पर होगा उतना ही उनका शीघ्र स्मरण होगा। अगर उनका प्रभाव ठीक तरह से न हुआ तो वह इतनी शीघ्रता से स्मृति में न आवेंगे। इसलिए हर समय नमोकार मंत्र पढ़ते रहने का स्वभाव बनाना चाहिए। रास्ता चलते समय पाँव चलने का काम करते हैं, मन विचार का काम साथ ही प्रारम्भ कर देता है। ऐसे समय निकम्मे विचारों के स्थान पर यदि भगवान् का नाम लिया जावे तो हानि की अपेक्षा लाभ ही है, शुभ कर्मों की वृद्धि होगी। रात्रि को बिछौने पर लेटते समय, इधर - उधर करवटें बदलते हैं नींद न आने से आर्तध्यान (ख्याली पुलाव) आरम्भ हो जाते हैं। इस समय भी विचारों को बदल कर क्यों न भगवान् का नाम जपने लग जावें जिसके बहुत लाभ हैं। यह अनुभव सिद्ध है कि ईश्वर का नाम जपने से नींद शीघ्र आती है तथा ध्यान उसकी तरफ होने से बुरे स्वप्न नहीं आवेंगे, निद्रा आनन्द दायक होगी। उस समय पाप के आने का मार्ग भी बन्द हो जाता है। इन कारणों से जब भगवान् का स्मरण सदा रखने का अभ्यास दृढ़ हो जावेगा तो अशुभ कर्म दूर होकर शुभ कर्मों का विकास होगा। जिससे आत्मा को स्वरूप ज्ञान एवं आत्मज्ञान बढ़ेगा। अतः ध्यान रहे कि चलते - फिरते उठते बैठते किसी भी स्थान पर क्यों न हों होंठ भी न हिले ईश्वर का नाम जपने में कोई हानि नहीं प्रत्युत लाभ ही लाभ है। कैसे चित्त से भी हरि का स्मरण किया जावे वह पापों का नाश करता है। जैसे अग्नि को अज्ञान से छूलें तो भी वह जलाती ही है क्योंकि जलाना उसका स्वाभाविक धर्म है।

जो स्वर चलता हो उसके अनुसार पांव नीचे उतारना

भगवान् स्मरण के अनन्तर शैया पर से नीचे उतरना चाहिये। हमारे नाक में दक्षिण और वाम दो छेद हैं उनके द्वारा हमारा सांस चलता रहता हैं। दोनों मार्गों का चलना तो कभी किसी विशेष समय में ही होता है प्रायः एक तरफ का साँस बहुत चलता है अतः जिस ओर के छिद्र से साँस चल रहा हो बिस्तर से उठते समय उस तरफ का पांव पहले धरती पर धरो। यदि संयोगवश दोनों स्वर चल रहे हों तो धरती पर न उतरो बिछौने में बैठे -२ ईश्वर का स्मरण करते चलो। क्योंकि दोनों स्वर चलते हुए पांव नीचे उतारने से हानि की सम्भावना होती है। दोनों स्वर बहुत देर तक नहीं चला करते, कुछ देर के बाद एक ओर का स्वर बन्द हो जाता है। जिधर का स्वर हो उस तरफ पांव चारपाई से नीचे उतारना ठीक है। ऐसे ही किसी काम को जाते समय भी जिधर का स्वर चल रहा हो उधर का पांव पहले उठाओ फिर दूसरा। इससे जिस कार्य के उद्देश्य से हमने यात्रा की है वह अवश्य सिद्ध हो जायेगी। इस प्रकार के नियमों पर चलने से यदि भाग्यवश कोई लाभ न भी हो तो, हानि भी नहीं होती है। इसके बाद रात्रि के कपड़े उतार कर नये शुद्ध वस्त्र धारण करके पवित्र स्थान पर आसन जमा कर नवकार मंत्र का जाप करना चाहिए।

: स्थान और कपड़ों की शुद्धि का प्रयोजन :

जब हम सांसारिक काम काज करते है तो हमारे दिल में अच्छे या बुरे विचार आया ही करते हैं। उनका प्रभाव हमारे कपड़ो पर भी पड़ता हैं। चाहे थोडा अथवा बहुत पड़ता अवश्य है। ऐसे ही मन के विचारों अथवा कार्यों का प्रभाव स्थान पर भी अवश्य हो जाता है ऐसे स्थान पर जो मनुष्य आकर बैठेंगे, उन पर उन अपवित्र परमाणुओं का असर पड़े बिना नहीं रह सकता। इस कारण ऐसे स्थान पर बैठकर धर्म का कार्य करने वालों के विचार शुद्ध नहीं रहते। मन एकाग्र नहीं होता। बुरे विचार उत्पन्न होते रहते हैं। ऐसे निकम्मे अशुद्ध विचार पैदा होने के कारण वस्त्र

और स्थान की अपवित्रता है इसलिए जहां तक सम्भव हो जाप करते समय वस्त्र और स्थान पवित्र होना चाहिए।

प्रायः देखा गया है जिस स्थान पर लड़ाई - झगड़ा मारपीट हो रही हो, वहां पर खड़े होने वालों के मन पर भी असर हुए बिना नहीं रहता। युद्ध के समाचार पढ़ते समय मन एक का पक्षपाती बन कर एक की जीत दूसरे की हार चाहा करता है। जीत हार के झमेले में पड़ कर आनन्द अथवा दुःखी हुए बिना नहीं रह सकता। इसी प्रकार शराब की दुकान, जुआगृह तथा वेश्यागृह में कभी संयोगवश जाने का और वहां कुछ क्षण बिताने का अवसर पड़े तो कितना ही संयमी पुरुष क्यों न हो मन पर प्रभाव हुए बिना नहीं रह सकता एवं यदि किसी शान्त मूर्ति, दयालु, ध्यानी महात्मा के पास बैठने का अवसर मिले तो वहां के पवित्र वायु मण्डल और शुद्ध स्थान के कारण बैठने वालों का चित्त शान्त और प्रफुल्लित हो जावेगा। तरह -२ के उत्तम विचार मन में उठेंगे। आत्मा साधना की ओर प्रवृति होगी। अपने किये हुए बुरे कर्मों पर पश्चाताप होगा। आगे को पवित्र जीवन बिताने की ओर ध्यान लगेगा। महात्माजी चाहे अपने मुख से कुछ भी उपदेश न करें वहाँ के शुद्ध वायु मण्डल के कारण हमारा ह्रदय अवश्य उदार बन जावेगा। ऐसा होने का कारण यदि सोचा जावे तो यही है कि इन महा पुरुषों के पवित्र विचार और उत्तम कार्यों ने वहाँ के वायु मण्डल तथा स्थान पर अपना असर कर दिया है।

ऐसे ही तीर्थ स्थान, देव मन्दिर अथवा उपाश्रय में जहाँ भक्ति करने का स्थान नियत किया गया है, हमारा मन सांसारिक व्यवहारों को भुला कर परमात्मा का स्मरण या भक्ति मार्ग में प्रविष्ट होने की अभिलाषा करेगा। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि - शुभाशुभ विचार अथवा कर्त्तव्य जिस स्थान पर किये गये हों उनका वैसा असर स्थान और वस्तुओं पर हुए बिना नहीं रहता। धर्मशास्त्र में भी लिखा है कि धार्मिक क्रिया करते समय पुरुषों के वस्त्र स्त्रियाँ, तथा स्त्रियों के पुरुष न पहनें। जिस स्थान पर स्त्री वा पुरुष बैठ कर उठे हों, उस स्थान पर दो घड़ी तक किसी ब्रह्मचारी स्त्री-पुरुष को नहीं बैठना चाहिए। इसका भाव यही है कि वस्त्र

और स्थान पर विचारों और कार्यों का असर अवश्य हो जाता है। इसी लिए कहा है कि शुद्ध वस्त्र पहन कर अपने रहने वाले कमरों से अलग भजन के लिए नियत की हुई किसी पवित्र भूमि पर शान्ति से बैठ कर ईश्वर का भजन, उत्तम ध्यान तथा नवकार मंत्र का जाप करना चाहिए।

धर्म - ध्यान भजन के लिये शास्त्रकारों ने पूर्व की ओर अथवा उत्तर की तरफ मुँह करके बैठना उत्तम माना है। इसका निचोड़ यह हुआ कि - वस्त्र, स्थान तथा शरीर को शुद्ध करके भगवान के भजन के लिए पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके एकाग्र चित्त से परमात्मा का भजन करें। अब यह प्रश्न हो सकता है कि यदि वस्त्र स्थानादि शुद्ध तथा एकान्त स्थान न मिले तो परमात्मा का जप नहीं करना चाहिए। इसका उत्तर यह है कि यदि सारी सामग्री पूरी मिल जाये तो बड़ा अच्छा है। अगर ऐसा न हो सके तो भी भजन अवश्य करना चाहिए। कीमती बढ़िया वस्त्र न मिलें तो लोग सादा वस्त्र लेकर गुजर करते हैं नंगे नहीं फिरते है। उत्तम भोजन न मिले तो रूखा सूखा खा कर पेट भरते हैं। इसी प्रकार यदि पूरी शुद्ध सामग्री न प्राप्त हो तो यथा-प्राप्त से भगवान का भजन अवश्य किया जाना चाहिए। शास्त्र कहते है कि पूरी सामग्री न मिल सके तो पांच पवित्र पद अर्थात् नमस्कार मंत्र के ध्यान से मनुष्य स्वस्थ हो या बीमार सब पाप कट जाते हैं। इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि अशुद्ध मनुष्य नवकार मंत्र का जप मन से करे, होंठ न हिलने पावें और मन में पूरा पूरा ध्यान रखकर भजन करें।

: जाप के भेद :

जाप के तीन भेद है:- १-उत्तम, २- मध्यम, ३- निकृष्ट।

उत्तम या उत्कृष्ट :-

होंठ मामूली हिलें। इस जाप में मन एकाग्र होकर शान्त हो जाता है, निम्न श्रेणी के विचार उत्पन्न नहीं होते। इसलिए इसका लाभ अधिक है।

जप करने वाला अपने मन में अष्टदल कमल का ध्यान धर कर उसमें श्री सिद्ध चक्र की तरह नौ पदों की स्थापना करें।

श्री सिद्धचक्र में इस प्रकार मध्य में अर्हन्तदेवजी ऊपर सिद्ध महाराज, दाहिने आचार्यजी, नीचे उपाध्याय, बायीं ओर साधु मुनि महाराज, चारों कोनों में सिद्ध के बाद क्रमशः दर्शन, ज्ञान, चरित्र और तप। इसी तरह करने से बराबर श्री सिद्धचरित्र जैसा मण्डल हृदय में बन जाता है। अब इन नव पदों का जाप एक एक पद पर ध्यान जमा कर आरम्भ करो। इस जाप को प्रारम्भ करते समय हो सके तो पद्मासन लगाना चाहिए। दक्षिण पाद बाईं जंघा पर बांया दाहिनी जंघा पर धरकर चौकड़ी बांधो। छाती तान कर मस्तक सीधा रखना चाहिए नेत्र बन्द करके अन्तर्ध्यान होकर बिना होंठ हिलाये मन में बोलो - नमो अरिहन्ताणम् पद का विचार करते हुए अष्ट कमल दल के मध्य में चिन्हित मूर्ति के सामने दृष्टि जमा कर जप - आरम्भ करो। जपते समय इस पद का अर्थ भी मन में विचारते रहना चाहिए कि - मैं भगवान् अर्हन्त को नमस्कार करता हूं।

भगवान की मूर्ति शुद्ध चन्द्रमा जैसी, प्रकाशमय तथा शान्त है जब तक मन में श्वेत प्रकाश क़ी चमक न पड़े, वहीं मन को जमाए रक्खो अथवा नमो अरिहंताणम् इस पद के अक्षर श्वेत रंग के न प्रतीत हों तब तक ठहरो। इसके बाद वहां से दृष्टि हटा कर ऊपर सिद्ध भगवान की ओर जमाओ। नमो सिद्धाणम् यह पद मन में उच्चारण करो। उदय होते हुए सूर्य भगवान की तरह लाल प्रकाश वाली सिद्ध भगवान की मूर्ति हैं। अर्थ का भी ख्याल रखो कि मैं सिद्ध भगवान को नमस्कार करता हूं। पहले की तरह इस रंग का दर्शन हो जाने से अथवा पद के अक्षरों का लाल वर्ण प्रतीत हो जाने पर आगे बढ़ो। मूर्ति अथवा अक्षर दोनों में से एक पर ध्यान जमाना चाहिये दोनों पर एक समय मन न लगाओ। फिर दक्षिण की ओर स्थित आचार्य की मूर्ति पर ध्यान लगाओ तथा नमो आयरियाणम् पद बोलो, साथ ही अर्थ का विचार हो कि मैं आचार्य को नमस्कार करता हूँ। आचार्य की मूर्ति अथवा पदों का वर्ण पीला माना है इसका भी रंग की छाप तक ध्यान करो। इस तीसरे पद पर मन को ऐसा दृढ़ करो कि अन्य विचार मन के समीप फड़कने न पावें। जब तीसरे पद का चमत्कार प्रकट हो जावे तो आगे नीचे की पंखुड़ी में उपाध्यायजी की

पूजा करो। नमो "उवज्झयाणम्" मैं उपाध्यायजी महाराज को नमस्कार करता हूँ पद बोलो। यहां हरा वर्ण मूर्ति का अथवा वर्णों का देखना। इसका प्रकाश होने के अनन्तर बांई ओर स्थित साधु महाराज का ध्यान नमो लोए सव्वसाहूणम् इस मंत्र के अर्थ सहित मन में विचारो। इसका वर्ण काला माना है। जब तक ऊपर कहे गये अनुसार दर्शन न हों तब तक मन और ध्यान उस स्थान पर जमाए रखना चाहिए।

----O----

धर्म का प्रभाव

चतुरंगो जयत्यर्हन् दिशन् धर्म चतुविधम्
चतुष्काष्टासु प्रसृतां जेतु मोह चमूमिव।

चारों दिशाओं में फैली हुई मोहराजाकी सेनाको जीतने के लिए ही मानों चार शरीर को धारण कर चार प्रकार के धर्म का उपदेश करते हुए अरिहंत भगवन्त जय को प्राप्त करते हैं।

संसार में धर्म सर्वोत्कृष्ट मंगल है। समृद्धि को देने वाला अनेक प्रकार के सुख प्राप्त कराने वाला, संतान को तारने वाला, पूर्वजों को पवित्र करने वाला, एक मात्र धर्म ही है। संपत्ति की इच्छा करने वालों को संपत्ति देने वाला, सौभाग्य के अर्थियों को सौभाग्य प्राप्त कराने वाला, पुत्रार्थियों को पुत्र और राज्यार्थियों को राज्य ऋद्धि प्राप्त कराने वाला भी सिर्फ धर्म ही है। विशेष क्या कहा जाय? जगत में ऐसी वस्तु नहीं कि जो धर्म के द्वारा धर्मकर्ता को प्राप्त न हो सके। मुक्ति की प्राप्ति भी धर्म से ही होती है।

धर्म का प्रभाव कथन या श्रद्धा मात्र से ही नहीं हैं, किन्तु विचारक मनुष्य संसार की विषमता का विचार करके इसका भली प्रकार निर्णय कर सकते हैं। प्रत्यक्ष दिखायी पड़ता है कि संसार में एक आरोग्य प्राप्त, दूसरा रोगी, एक धनवान तो दूसरा निर्धन, एक दाता दूसरा भिक्षु, एक मनुष्य, लाखों मनुष्यों का पूज्य, और दूसरा मनुष्य लाखों मनुष्यों का तिरस्कार पात्र है। इत्यादि अनेक प्रकार की विचित्रता का अनुभव क्यों होता है? मनुष्यता समान होने पर भी इस तरह के साधनों द्वारा समान प्रयत्न करने पर भी एक की उस कार्य में विजय और दूसरे की पराजय दिखायी पड़ती है। समान साधन और समान ही प्रयत्न करने पर विजय और पराजय का कारण क्या? विचारक मनुष्य विचार द्वारा इस कारण को शोधते हुए स्वयं निश्चय कर सकता हैं कि इन तमाम बातों में कारण भूत मात्र एक धर्म ही है। धर्म का विषय बहुत गहन है। उसके कार्य और कारण के नियमों का अभ्यास बहुत सूक्ष्मता से करना चाहिये। धार्मिक

सूक्ष्म ज्ञान के सिवा मनुष्य बहुत दफा गंभीर भूल कर बैठता है, और उससे अपनी धार्मिक श्रद्धा को शिथिल कर लेता है।

दृष्टान्त के तौर पर धर्म श्रद्धा के शिथिल होने का बहुत समय यह कारण बनता है कि पाप बुद्धि से आजीविका करने वाले, कपट प्रपंच रचने वाले, और पाप में अधिक प्रवृत्ति करने वाले बहुत से मनुष्य सुखी दिखायी पड़ते हैं। व्यवहारिक कार्य प्रपंच में भी कदाचित् उन्हें सफलता प्राप्त होती दिखायी पड़ती है। इत्यादि प्रत्यक्ष कारणों को देख कर बहुत से मनुष्य अपने दिल में शंकाशील बनते हैं कि धर्म है या नहीं? धर्म का फल मिलता है या नहीं? पापी लोग सुखी क्यों हैं? धर्म करने वाले दुखी क्यों दिखायी पड़ते हैं? सच पूछो तो इस प्रकार की शंका करने वाले मनुष्यों को धर्म और उसके कार्य कारण के नियमों का पूर्ण परिज्ञान ही नहीं हो पाया इसीसे बाह्य व्यवहार को देख कर उनके दिल में शंकायें पैदा होती हैं, परन्तु उन्हें सोचना चाहिये कि संसार में कोई भी कार्य, कारण के बगैर निष्पन्न नहीं होता।

जमीन में बीज बोये बाद हवा पानी और खाद आदि निमित्त सर्वथा अनुकूल हों तो वह बीज अल्प समय में ही अंकुरित हो शाखायें, पत्तियाँ, वगैरह उत्पन्न कर एक वृक्ष के रूप में नजर आता है, और समय पर फल भी देने में समर्थ होता है। परन्तु पर्याप्त अनुकूल साधन होने पर भी वह बीज एक ही दिन में महान् वृक्ष के रूप में नहीं दीख सकता। क्योंकि कारण को कार्य के रूप आने के लिये कुछ भी समयान्तर या व्यवधान की आवश्यकता है। इसी प्रकार इस दृष्टान्त के समान धर्मवृक्ष के मीठे फल प्राप्त करने के लिये व्यवधान की जरूरत होती है। एवं पाप रूपी वृक्ष के कड़वे फलों के साथ भी इस व्यवधान की समानता समझ लेना चाहिये। जिस प्रकार वृक्ष की वृद्धि में और उसके शीघ्र फल देने में अनुकूल कारणों की आवश्यकता होती हैं उसी प्रकार उग्र पुण्य और उग्र पाप वाले कर्मों का फल थोड़े ही समय में तीव्र मिलता है। और मंद परिणाम से किये हुये पुण्य पाप वाले कर्मों का फल कालान्तर में अल्प सुख दुख रूप से मिलता है।

उपरोक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि जो पाप वृत्ति करने वाले प्रपंची मनुष्य इस समय सुखी दीख रहे हैं और व्यवहार में सफलता प्राप्त करते है। उनका पूर्व कर्म जो इस समय पापाचरण करते हुए भी उन्हें सुख और सफलता दे रहा है। इस समय के अशुभ कर्मों के फलों के बीच पूर्व के शुभ कर्मों का व्यवधान पड़ा हुआ है। यह व्यवधान या अन्तर पूर्ण होने पर अर्थात् पूर्वकृत शुभ कर्म का फल समाप्त होंने पर और वर्तमान काल के या पूर्व काल के अशुभ कर्म उदय होने पर इस समय सुखी दिखायी पड़ने वाले मनुष्यों के तीव्र या मन्द पाप परिणाम के परिमाण में दुःख की न्यूनाधिकता अवश्य परिवर्तन हो जाती है।

क्रिया अच्छी हो या बुरी उसका फल अवश्य मिलता है। अच्छी क्रिया का अच्छा फल, और खराब क्रिया का खराब फल प्राप्त होता है। इसको साबित करने के लिये अनेक दृष्टांत नजर के सामने मौजूद हैं। इस लिए धर्म सत्य है और उसका फल अवश्य ही मिलता है। मनुष्यों के लिए धर्म की परमावश्यकता है और वह धर्म इस मनुष्य जिन्दगी में ही प्राप्त हो सकता है। जैसे छाछ से मक्खन, कीचड़ से कमल,बांस से मुक्कामणि सारभूत होने के कारण ग्रहण करने योग्य हैं, वैसे मनुष्य जन्म से सारभूत धर्म ग्रहण करने योग्य है।

दुर्गति में पढ़ते प्राणियों को धारण करने वाला होने से और सद्गति प्राप्त कराने वाला अर्थात् जन्म मरण के भयंकर दुःखों से मुक्त कराने वाला होने के कारण वह धर्म कहलाता है। ज्ञान दर्शन और चारित्र इन तीनों में पूर्वोक्त सामर्थ्य होने से रत्नत्रय ही धर्म है।

जिससे जीवाजीवादि तत्वों का बोध होता है उसे महान् पुरुष सम्यक् ज्ञान कहते हैं। आत्मा और उससे भिन्न अजीव, ये दो मुख्य वस्तु हैं। इन दोनों मुख्य तत्वों में संसार के सर्व दृश्य और अदृश्य पदार्थों का समावेश हो जाता है। जड़ पदार्थों के साथ जो आत्मा की आसक्ति है उसके कारण ही यह सर्व प्रपंच दिखायी पड़ता है। आत्मा और जड़ पदार्थ का जो संमिश्रण है वही नाना प्रकार के देह धारण करने का कारण है। इष्टानिष्ट जड़ पदार्थों की प्राप्ति से उत्पन्न होने वाला हर्ष

शोक ही समिश्रण का कारण है। जड़ पदार्थों के लिये उत्पन्न हुए राग द्वेष से कर्म का आगमन होता है। ये कर्म अनेक रूप में विभाजित होकर आत्मा के शुद्ध गुणों को अच्छादित करते हैं (दबाते हैं) उन कर्म आवरणों के द्वारा यह आत्मा चतुर्गति रूप संसार में परिभ्रमण करती हुई अनेक प्रकार की अनेक यातनाओं पीड़ाओं का अनुभव करती है। संसार की अनेक विध पीड़ाओं की शांति का मुख्य कारण मात्र ज्ञान है। ज्ञान से सत्यासत्य का, नित्यानित्य का, हिताहित का, और स्वरूप का बोध होता है। वस्तु का वस्तु के रूप में बोध होने से सत्य और हितकारी वस्तु की ओर प्रीति पैदा होती है। वही सुखदाई है ऐसी श्रद्धा उत्पन्न होती है। यह श्रद्धा प्राप्त होने पर तदनुसार आचरण करने की रुचि होती है और उस प्रकार आचरण करने से आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। तात्पर्य यह है कि सद्ज्ञान से सत्य वस्तु मालूम होती है, सद् दर्शन से उस में श्रद्धा पैदा होती है, और चारित्र तदनुसार बर्तन किया जाता है। या यों कहें कि सत्य वस्तु जानने को सत् ज्ञान, उसके निश्चय् को सद् दर्शन और, और जैसा जाना तथा जैसी श्रद्धा वैसा ही आचरण करना वह चारित्र। ज्ञान, दर्शन और चारित्र इन तीनों में ज्ञान की मुख्यता है। क्यों कि इसके बगैर पिछले दोनों अंग प्राप्त नहीं होते।

अदृष्टार्थ प्रकाशक, ज्ञान तीसरे नेत्र के समान है। गाढ़ अज्ञान अन्धकार को दूर करने वाला ज्ञान सूर्य बिम्ब के समान है। ज्ञान निष्कारण बन्धु है। ज्ञान मनुष्यों के लिए संसार रूपी समुद्र में जहाज के समान है। कर्म के सिद्धान्तों का ज्ञान अधिकतर मनन करना चाहिये और उसे हरएक प्रसंग और क्रिया में उपयुक्त करना चाहिए। दुःखदाई प्रसंगों में अपना दुःख कम करने के वास्ते उसे अवश्य ही सन्मुख लेना और धैर्य से दुःख के प्रसंगों को पार करना चाहिये जिस प्रकार एक श्लोक के अर्थ की विचारणा से राजकुमारी मलया सुन्दरी ने दुख के महान् समुद्र को पार कर लिया।

------O------

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 2471833

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 2378841
(R) 475-9712/2807

IN THE MEMORY OF PRABHAT NAHATA
PRADIP NAHATA
139/C/4 Anand Palit Road, Calcutta - 700 014
Phone : 2445839

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph. : (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 236-2210

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SMT. ANGOORI DEVI SINGHI
'SINGHI PARK'
48/3 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 4642851/3511

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph. (O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile : 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING
MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street
2nd Floor, Calcutta -700 007
Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Phone -Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile : 98 3102 8566
Resi : 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072
Ph : 215-1297, 236-4230/4240

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta-69
Phone : 248-1533, 248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J. L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 229 5047, 9110

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

NARENDRA JAIN
Super Iron Foundry
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 651-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321
(Resi) 554 1289

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248 8576/0669/1242
Resi - 225 5514, 237 8208, 229 1783

DHARAM CHAND SARAOGI SMRITI NYAS
'Jain House'
8/1 Esplanade East
Calcutta - 700 069

IN THE MEMORY OF VIJAY SINGH BADER
Ratan Bader, Sudarsan Bader
26, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013, Phone :

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Phone : 239 6205/9727

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph : 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242, 2469551
Resi- 4553632/4399, Fax : (91) 033-2495665
Gram : gloscab, E-mail : gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 235 7312, Shop : 230 1180
Resi : 241 6831

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2355009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700007
Phone : Shop 230 0216, (R) - 2359657/9312

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 2387764, (R)6664541, 5309286

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta-700 007
Ph : Shop-242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta-700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta-700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D.C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta-700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta-700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta-700 007

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No- 7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Phone : 287 0448.

PARK PLACE HOTEL
'Singhi Villa'
49/2 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 475 9991/92/7632.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Phone : 2352076, 2355701

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED
Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta-700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax : + 91-33-245-7591
Telex : 021-2101 GANG IN

Phone : 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill :

BANSBERIA
Dist : HOOGHLY
Pin-712 502
Phone : 6346441/6446442
Fax : 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र घर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

**Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

Regd. Office

2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333

Vizag Office

28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 569208/563276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi-110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsnl.net.in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी ।"

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P.O. Azimganj, Pin - 742122
Dist : Murshidabad
Phone : Code : 03483 No. : 53232
Cal. Phone No. : 033 2300432, 5213863

With Best Compliments...

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven design time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer from 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE : 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-2259484/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English :

1. *Bhagavatī-sūtra*—Text edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;

Vol-I	(śatakas 1-2)	Price :Rs.	150.00
Vol-II	(śatakas 3-6)		150.00
Vol-III	(śatakas 7-8)		150.00
Vol-IV	(śatakas 9-11)		150.00

2. James Burges—*The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates [It is the glorification of the sacred mountain Śatruñaya.] Price :Rs. 100.00
3. P.C. Samsukha—*Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani, Price :Rs. 15.00
4. Ganesh Lawani—*Thus Sayeth Our Lord*, Price :Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Banerjee—Weber's *Sacred Literature of the Jains* Price :Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani—*Atimukta* (2nd edn) translated by Shrimati Rajkumari Begani Price :Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani—*Śraman Saṃskriti kī Kavitā*, translated by Shrimati Rajkumari Begani Price :Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani—*Nīlāñjanā* translated by Shrimati Rajkumari Begani Price :Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani—*Candana-Mūrti*, translated by Shrimati Rajkumari Begani, Price :Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani—*Vardhamān Mahāvīra* Price :Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani—*Barsāt kī Ek Rāt*, Price :Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani—*Pañcadaśī*, Price :Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani—*Yādō ke Āine mē*. Price :Rs. 30.00

Bengali :

14. Ganesh Lalwani—*Atimukta*, Price :Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani—*Śraman Saṃskṛti Kavitā*, Price :Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha—*Bhagavān* Mahāvīr O Jaina Dharma, Price :Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay—*Praśnottare Jaina-dharma* Price :Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC-330
Vol. XXIII No. 7 TITTH AYARA October 1999
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 3018/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225